Ques. 1 Discuss the various Theories about the origin and antiquity of coins in Ancient India.

Answer —

मुद्रा शास्त्रियों में इस बात पर गहरा मतभेद रहा है कि भारत में सर्वप्रथम सिक्कों का चलन कब और कैसे हुआ। पाश्चात्य विद्वान, जिन्हें भारत के प्रत्येक वस्तु में अनुकरण ही दिखाई देता है, कहते हैं कि भारतीय सिक्के भी विदेशी अनुकरणों पर चौथी या पाँचवी शदी ई० पू० में तैयार किये गये। परन्तु ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक विज्ञान के अनुसंधान में अब यह बात सर्वविदित करती है कि भारत के सिक्के स्वतन्त्र रूप से कम से कम छठी शदी ई० पू० में अवश्य ही तैयार किये गये। आगे इसी बात को हम सप्रमाण देखेंगे।

बैक्ट्रिया के ग्रीक सिक्कों के अनुकरण का सिद्धांत-

विल्सन तथा प्रीसेप के कथनानुसार भारत के सिक्कों की शुरुआत बैक्ट्रियन ग्रीक के अनु० पर हुआ। परन्तु सिक्कों की परीक्षा और अध्ययन से यह बात सारहीन मालूम पड़ती है। कनिंघम महोदय के अनुसार अगर यह बात होती तो भारतीय सिक्के भी उसी शकल प्रकार तथा तौलक में होते। डा० अल्तेकर ने इन बातों को सामने रखकर दिखाया है कि भारतीय आहत सिक्के और ग्रीक सिक्कों में बहुत समानता मिलता है।

ग्रीक सिक्के हमेशा गोल होते हैं परन्तु भारतीय आहत सिक्के अधिकतर चौकोर लम्बे, इत्यादि होते हैं। ग्रीक सिक्कों पर अभिलेख मिलते हैं पर आहत सिक्कों पर नहीं। ग्रीक सिक्कों पर अग्रभाग में राजा का चित्र और पृष्ठ भाग पर अधिकतर धार्मिक चित्र पाया जाता है। यह बात आहत सिक्कों के साथ नहीं पाया जाता है इन सिक्कों पर भारतीय चिन्ह ही मिलते हैं।

कर्टियस के अनुसार सिकन्दर

ने जब भारत पर आक्रमण किया तो उसे मार्ग में तक्षशिला के राजा ने उसका स्वागत किया तथा भेंट में चाँदी के सिक्के दिये थे। यह बात सिद्ध करती है कि सिकन्दर के हमले से पूर्व ही यहाँ चाँदी के सिक्के प्रचलित थे। यह बात प्रमाण से भी साबित होती है।

केली महोदय ने काँगड़ा निधि में जो सिक्के मिले थे उसमें Antiokas, Antialdikus मिनेण्डर और साथ ही पंचमार्क सिक्के थे। आहत सिक्के इस्तमाल से घिसे हुए थे। जबकि ग्रीक सिक्के देखने में नये प्रतीत होते थे। यह साबित करता है कि इस निधि के सिक्कों में आहत प्रकार के भारतीय सिक्के प्राचीन हैं। तक्षशिला में मार्शल की खुदाई से यह बात पूर्ण रूप से सिद्ध होती है। डा० अल्तेकर के अनुसार इन निधियों से यह बात सिद्ध होती है कि ग्रीक लोगों से कम से कम दो सौ वर्ष पूर्व भारत वालों को सिक्के बनाने का ज्ञान था। डा० उपाध्याय ने यह भी दिखाया है कि यूनानी राजा दिमित्रस के सिक्कों पर भारतीयता की झलक है।

ईरानी सिगलोई से उत्पत्ति —

जेम्स प्रिंसेप / जे०एस० दिकाउर दयकस के कथनानुसार भारतीय आहत सिक्के चाहे वह चाँदी में हो या ताम्बें में वह ईरानी सिक्कों के एक उपप्रकार थे। ईरान के अखमेनी राजाओं ने अपने सिगलोई के साथ-साथ आहतों में भी भारतीय चिह्नों के साथ बनवाये।

सिगलोई का रूप तौल, माप तथा चिह्न भारतीय पंचमार्क से बिलकुल भिन्न है। पंचमार्क पर हम राजा का चित्र ही नहीं पाते और न सिगलोई पर आहत चिह्न। पंचमार्क सिक्कों की उत्पत्ति मध्यदेश में हुई होगी जहाँ ईरानी एकमें नियम प्रभाव नहीं पहुँच

सका था। सिगलोई का तौल 86 ग्रेन है जबकि साधारणतया पंचमार्क का तौल 56 ग्रेन होती है। अतः यह कहना निराधार है कि पंचमार्क सिक्के एकमेनियन राजाओं के बनवाये क्योंकि अगर ऐसा होता तो कुछ प्रभाव अवश्य ही पड़ता तथा प्राचीन प्रकार के पंचमार्क सिक्के मध्यदेश में नहीं मिलते।

बेबिलोनियन सिक्के से उत्पत्ति का सिंद्धात—

इस सिंद्धात को केनेडी तथा स्मिथ ने चलाया। बेबिलोनिया के सिक्के और भारत के पंचमार्क सिक्कों को एक ही तरह से पंच किया गया है। दोनों पर अभिलेख नहीं मिलते हैं। दोनों ही चिपटे हैं। दोनों का तौल समान है तथा दोनों को ही कोई शक्ल निर्धारित नहीं है। दोनों में ही मिला हुआ ताम्बा प्रयोग हुआ है।

बेबिलोनिया के सिक्के पर जो चिह्न पंच किये हुए मिलते हैं वह भारतीय पंच मार्क सिक्कों से Nature और Character से भिन्न है। सिक्कों का तौल 132 ग्रेन होता था जबकि पंच मार्क का 56 ग्रेन ही। अलतेकर महोदय के मतानुसार बेबिलोनिया का सिक्का ई॰पू॰ 550 ई॰पू॰ से पीछे नहीं जा सकता जबकि भारतीय सिक्का उसके पहले ही पूर्णरूप से प्रचलित था।

अतएव भारतीयों का यूनानी ईरानी तथा बेबिलोनिया के सिक्कों की नकल पर तैयार करने की बात अप्रमाणिक हो जाती है। भावार्थ यह है कि भारत में सिक्के बनाने का रिवाज पूर्व 8वीं सदी ई॰ पू॰ में अवश्य ही था। इसपर पूर्णरूप से भारतीयता की ही छाप थी। यह सिक्के एन॰ बी॰ पी॰ नामक बर्तनों के साथ मिले हैं जिस समय वैज्ञानिक ढंग से (C-14) 600 से 700 ई॰ पू॰ तक माना गया है। अतः कम से कम 600 ई॰ पू॰ के सिक्के अवश्य ही बनते थे।

Scanned with CamScanner

भारतीय कला में ऐसे चित्र खुदे हैं जिनमें सिक्कों का दृश्य दिखाई पड़ता है। भरहुत के वेष्टनी पर एक चित्र अंकित था जिसके गाड़ी से सिक्के उतार कर जमीन पर फैलाते हुए दिखाया गया है। इसे जेतवन जातक का दृश्य माना जा गया है। इसी प्रकार का दूसरा चित्र बोधगया में और हाल ही में उत्खननों से मिला है। इससे मालूम होता है कि प्राचीन मुद्रा चौकोर होता था तथा इसकी उत्पत्ति भारत में हुई तथा इसे जेतवन जातक के अनुसार कार्षापण कहते थे।

भारतीय इतिहास की जानकारी के लिए साहित्य एक मुख्य साधन माना जाता है। इसके अध्ययन से भी भारतीय मुद्रा के बारे में अनेक जानकारी होती है। प्राचीन भारत में गाय को विनिमय का साधन मानते थे। वैदिक काल में इसके साथ ही साथ एक सोने के पिंड का वर्णन आता है जो निष्क के नाम से जाना जाता है। वेदों में कई स्थानों पर निष्क को सोने का हार बताया गया है। उपनिषद तथा ब्राह्मण ग्रंथों में भी इसे हार ही कहलाया गया है। परन्तु कुछ लोग इसे मानने को तैयार नहीं हैं कि निष्क किसी प्रकार का आभूषण था। उनका विचार है कि निष्क एक प्रकार के सोने का नाम था जिसे मिलाकर औरतों के गले में पहनने योग्य बनाया जाता था। यह विवाद पूर्ण विषय है। ऋग्वेद में उल्लेखित निष्क को हार माना भी परन्तु ब्राह्मण ग्रंथों में लिखे निष्क को उस रूप में नहीं ले सकते। ब्राह्मण काल में निष्क को सोने का पिंड (दश हिरण्य पिण्डदान) मानते थे और सिक्कों की तरह काम में लाते थे। संहिता में भारमान तथा कृष्णाल नामक सिक्को का नाम पाया जाता है। सम्भवतः ये पिंड सर्वप्रथम एक तौल के धातु के जो कालान्तर में उसी नाम से सिक्के के रूप

पुकारे जाने लगे। कृष्णाल एक तरह का तौल है इसी तौल का सोना व्यवहार किया जाता रहा होगा। मासा में मासक तथा वर्ष को कार्षापण का नाम दिया गया।

वैदिक साहित्य में दान का प्रकरण आता है उस समय दान में देने वाले धातु पिण्डों को सिक्कों के नाम से पुकारे जा सकते हैं। शतपथ ब्राह्मण में जिक्र है कि राजा के रथ के पहिये के नीचे गोलाकार शतमान बाँधे जाते ऐसा वर्णन बृहदारण्यक उपनिषद में भी है। इससे प्रकट होता है कि शतमान चाँदी के सिक्के थे। वेदों में अत्यंत दान के वर्णन में निष्क दान का उल्लेख आता है। सत्यायन श्रौत सूत्र में यज्ञ की दक्षिणा में शतमान देने का उल्लेख है। अतः यह मानना पड़ेगा कि वैदिक काल में बड़ी मुहर वाले सिक्के थे तो भी पिंड को सिक्के की तरह व्यवहार करते थे जो वास्तव में सिक्के से भिन्न नहीं समझे जा सकते। ई० पू० एक हजार वर्ष के ब्राह्मण तथा सूत्र साहित्य के आरम्भ में सिक्कों का विशिष्ट रूप अवश्य ही मिल चुका था। शतमान सौ रत्ती स्वर्ण ८० रत्ती तथा कर्षापण ४० रत्ती के बराबर तैयार किये जाते थे। ब्राह्मण तथा बौद्ध साहित्य में और अधिक सिक्कों के नाम मिलते हैं।

जातक ग्रन्थों में निष्क, शतमान, कृष्णाल स्वर्ण तथा कर्षापण के नाम मिलते हैं। यह निश्चित रूप से प्रमाणित नहीं है कि ये सिक्के थे या तौल का नाम था परन्तु कथानकों से यही अभिप्राय निकाला जा सकता है कि ये सिक्के के लिए प्रयुक्त किये जाते थे इसके लिए हम कुरुक जातक, कुरु जातक सरभंग जातक का नाम ले सकते हैं इससे पता चलता है कि निष्क तथा कर्षापण

क्रमशः सोने और ताम्बे के सिक्के थे। विनयस्पष्ट
में वर्णन है कि राजगृह में सिक्कों के प्रचलन थे।
बुद्ध घोष ने सांमत शासादियों के रूप रूप पर जो
टिप्पणी लिखी है उसमें कैगाम सभी द्वारा सिक्के
तैयार करने का संदर्भ आता है। डा० उपाध्याय
के अनुसार बहुत सम्भव है कि उस समय में
पंचमार्क के सिक्कों के बारे में उसका संकेत है

पाणिनी ने भी सिक्कों के विषय में
अनेक स्थानों पर उल्लेख किया है एक सूत्र है
"तेन क्रीतम" अर्थात खरीदा गया। एक जगह
"विभाषा बाषापिण सह स्रमभा"। उसी पर टीका
करते हुए पतंजली ने उदाहरण दिया है कि-
परन्चाति रूपर्तक काषपिन दशेनाति रूपतकेकाष
पिण की परिणा करती है। इसके अतिरिक्त
सतमान तथा निष्क के भी नाम सूत्रों में आते
है। उसके कथनानुसार सिक्का तभी समझा जाता
जब उस पर मोहर लगा दी जाय। रूप था
पाहत प्रशंसीयण का सिक्काकार के भी ठीक उसी
बात को लिखा है। कि निघातिका-ताडनादिवा
दाना रविपुरूष अहुलाहते तयाहत मित्युच्यते

कौटिल्य ने सुवर्ण धारण
सतमान पाद, मासक तथा काकिनी आदि विभिन्न
सिक्कों का वर्णन किया है। उस समय तोके
शाविक ढंग से सिक्के तैयार किये जाते थे।
उस विभाग का अध्यक्ष रहता था।
कौटिल्य ने पण नामक एक सिक्के का नाम लिया है
जो प्राचीन कार्षापण के समान था। उसके 16 वें
भाग को मासक कहते थे। मासक की एक चौथाई
को काकिनी का नाम दिया गया था। इस प्रकार
के सारे सिक्के एक साल से तैयार किये जाते थे

भारतीय साहित्य के अध्ययन
से यह बात प्रतीत होती है कि सिक्कों का
प्रचलन यहाँ बहुत ही प्राचीन काल से था।

जो कम से कम 8वी सदी ई० पू० तक तो जा ही सकता है। विभिन्न खुदाईयों से मिले सबसे प्राचीन सिक्के जिसे पंचमार्क कहा जाता है कम से कम 6ठी सदी ई० पू० तक कही जा सकती है। अभी हाल ही में हुए एरण की खुदाई से गोलाकार सोने का टुकड़ा मिला है जो ताम्र पाषाण युग का है इसका तौल 2 ग्रेन है। कृष्ण दत्त वाजपेयी जिनके निगरानी में खुदाई हुई के अनुसार यह व्यापार विनिमय के प्रयोग में आता होगा।

इस प्रकार हम पाते हैं कि भारतीय सिक्कों की प्राचीनता पुरातत्व स्रोतों के आधारपर 12वीं 13वीं सदी ई० पू० तक जा सकती है। जो भी हो हम यह कह सकते है कि भारत के सिक्के बहुत ही प्राचीन काल से और किसी विदेशी अनुकरण के बनते थे। अभी तक के ज्ञान के अनुसार पंचमार्क अथवा एरण में मिले गोलाकार सोने के टुकड़े को प्राचीनतम सिक्का मान सकते हैं।